प्रश्न- 'कृष्णजन्म'क कथावस्तु लिखू।
वा
'कृष्णजन्म'क महत्ता स्थापित करू।
वा
'कृष्णजन्म' महाकाव्यक सारांश लिखू।

प्रश्नोत्तर-

'कृष्णजन्म' एक आख्यान-काव्य थिक जकर कथानक गोकुल-मथुरा-द्वारिकाक परिधिमे घुमैत कृष्णक जन्म, हुनक बाल्यावस्थाक मनोहारी वर्णन, कंसक वध आ अन्तमे जरासन्धक वधधरि सीमित अछि। सम्पूर्ण ग्रन्थ एकहि छन्द 'चौपाइ'मे रचल गेल छैक।

मिथिलामे 'कृष्णजन्म'क बड़ आदर प्राप्त करैत भक्त समाजमे सबसँ बेसी समादृत अछि। सर्वप्रथम ग्रिअर्सन साहेब एकर दस अध्यायकेर सम्पादन कए अंगरेजीमे अनुवाद कएलनि आओर बंगालक एसियाटिक सोसाइटीक जर्नलमे सन् 1888मे प्रकाशित करबौलनि। तत्पश्चात् प. धरेश्वर झाक सम्पादकत्वमे एकर एक संस्करण यूनियन प्रेस, दरभंगासँ प्रकाशमे आएल। पछाति डॉ. उमेश मिश्र, प्रो. रमानाथ झा आ प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क पृथक्-पृथक् सम्पादनमे सेहो एकर प्रकाशन भेल। 1988 ई.मे एकर प्रकाशन मैथिली अकादमी, पटनाक द्वारा सेहो कएल गेल। एहि क्रममे ई देखबामे अबैछ जे ग्रिअर्सन साहेब जतए एहि पोथीक नाम 'हरिवंश' दैत दस अध्यायक सम्पादन कएलनि, ओतहि बादकेर संस्करणमे एकर नाम 'कृष्णजन्म' पड़ि गेल आ अध्याय दससँ बढ़ि अठारह धरि पहुँचि गेल। आइओ ई अन्वेषणक अपेक्षा रखैछ जे नाम ओ अध्याय कोना बदलल? किछु गोटएकेँ एकर नाम 'कृष्णजन्म' उपयुक्त नहि बुझाइत छनि, कारण एहिमे मात्र कृष्णक जन्मे धरिक कथा नहि, अपितु कंस आ जरासन्धक मृत्यु धरिक कथा कहल गेल अछि। जँ कृष्णक जन्मक कारणकेँ आगाँ कए विचारल जाए तँ नाम उचित बुझि पड़ैछ, मुदा महाकवि तँ स्वयं लिखने छथि-

'हमहु कयल अछि मन बड़ गोट
कृष्ण-जन्म-परिनय नहि छोट।'

अर्थात् हुनका कृष्णक जन्म ओ परिणय धरिक कथा कहबाक छलनि, एहि अनुसारेँ ग्रिअर्सन साहेबक 'हरिवंश' नाम सार्थक लगैछ। समीक्षक महोदय सभकें एकसँ दसम आ एगारहमसँ अठारहम अध्याय धरिक भाषा समान दृष्टिगोचर नहि होइत छनि तेँ शंका मनमे उपजैत छनि। ओना अठारहम अध्यायक अन्तमे स्वयं मनबोध लिखने छथि-

'कवि मनबोधकृते हरिवंशे कृष्णजन्मनि भाषायाम् अष्टादशोऽध्यायः'

एहिसँ हरिवंश आ कृष्णजन्म अपन उपस्थितिक भान करबैछ।

अस्तु, ई तँ सर्वविदित अछि जे 'कृष्णजन्म'क कथावस्तु भागवत ओ हरिवंश पुराणपर आधारित अछि। पोथीक पहिलसँ दसम अध्याय धरिक कथा श्रीमद्भागवतक दशम स्कन्धक पूर्वार्द्धक आधारपर लिखल गेल अछि तँ एगारहमसँ अठारहम अध्याय धरिक कथा हरिवंश, विष्णुपर्वक आधारपर लिखल गेल अछि।

Scanned by TapScanner

'कृष्णजन्म'क विषय-वस्तु बड़ प्रसिद्ध अछि। पृथ्वीपर जखन राक्षसक उत्पात बढ़ि गेल, जनता त्राहि-त्राहि करए लागल तखन विष्णु भगवान कृष्णक रूपमे वसुदेवक आठम बालकक रूपमे अवतार लेबाक निश्चय कएलनि। ई सूचना नारदसँ पाबि कंस अपन बहिन-बहिनोइ अर्थात् देवकी-वसुदेवकें जहलमे बन्द कए देलक। पहिल सात बच्चाकें पाथरपर पटकि मारि देलाक बाद आठम बच्चाक रूपमे कृष्णक जन्म भेल। आकाशवाणीक निर्देशानुसार वसुदेव कृष्णकें राता-राती नन्दक ओतए पहुँचा देलनि। इहो सूचना कंसकें नारद मुनिसँ प्राप्त भेलैक, ओ व्यग्र भए उठल। ओम्हर कृष्णकें पाबि नन्द-यशोदा आ हुनका सङ्ग सम्पूर्ण मथुरा झुमि उठल। कृष्णक दिन बीतए लागल, सभ दिन किछु-ने-किछु लीला देखबए लगलाह। एहि क्रममे यशोदा माता परेशान रहए लगलीह-

"कौसल चलथि मारिकहुँ चाल
जसोमति काँ भेल जिबक जंजाल"।

कृष्ण सात बरखक भेलाह आ आब गाय चराबए जाए लगलाह, एहि क्रममे कालिय दमन, प्रलम्बक संहार, गोबर्द्धनलीला सन-सन कतेको असाध्य कार्य कए अपनामे देवत्वक रूप देखाओल। एम्हर कंस दिन-ब-दिन घटैत घटनासँ आतंकित रहए लागल। ओ जल्दी-सँ-जल्दी एहिसँ निदान चाहए लागल। एही क्रममे अक्रुरकें पठाए अपना सङ्ग कृष्णक मल्लयुद्धक आयोजन करबौलक। मनमे डर तँ पैसले छलैक तें मल्लयुद्धसँ पहिनहिँ बताह हाथीकें सनकाए कृष्णक अन्त करबाक प्रयास कएलक। मुदा कृष्ण ओहि हाथीक संहार करैत अखाढ़ापर चढ़ि कंसकें ललकारा देलनि। कंस मल्लयुद्धक हेतु प्रस्तुत भेल, कृष्ण मचानपरसँ पटकि कंसक अन्त कएलनि। एहि ठाम कविक उक्ति छनि-

"भूमिक भार उतारल आई
हरि जत हनल तत गनलो ने जाई
कतोएक रनपति घर दिस भेल
बाँचल रहल से मारल गेल।"

एकर बादक अध्यायमे भीम आ जरासन्धक विशेष युद्धक वर्णन कएल गेल अछि जाहिमे कृष्णक उपस्थिति मुख्य आकर्षण छलैक-

"जरासिन्धु नृप मारल गेला
सभ देवता मिलि हरखित भेला
नाना नओज सबहुँ मिलि रचल
बैकुण्ठ जाएक डगहर धएल।"

एहि प्रकारें 'कृष्णजन्म'मे कृष्णक जन्म ओ हुनक जन्मक सार्थकताकें सिद्ध कएल गेल अछि। एकर अन्य महत्वक सङ सबसँ बेसी जे तत्व आकर्षित करैत अछि से थिक कथावस्तुमध्य मैथिल संस्कृतिक छाप। जहिना कोनो मैथिलक घरमे बच्चाक जन्म भेलापर हँकार देल जाइछ, तेल-सिन्दुर बाँटल जाइछ, सोहर गाओल जाइछ, घर-आङनमे उत्सवक वातावरण बनि जाइछ, ठीक तहिना एहूँ काव्यमध्य कृष्णक जन्मक समयमे होइछ। भदबाक विचार ओहू दिनमे खूब छल-

"केओ भेलि जोइसिक आँगन ठाढ़ी
कहिअ त सभ अभरन दिअ काढ़ी
हम भरिजन्म सुदिनि भए रहब

Scanned by TapScanner

पुछए आबथि तँ भदबा कहब।"

सरोंक नानाविध तैआरी, कोठिक माटिक ढेरी करब, अरिगह-करिगह खनब, गुदगर काठक मुदगर बनाएब, ओकरा खेलएबाक विविध ढङ- सभ मिथिलेक चित्र थिक। प्रायः सबसँ पहिने एही ठाम मिथिला ओ बेतिआकेँ पृथक् करबाक स्पष्ट वृतान्तक वर्णन कएल गेल अछि।

मैथिली साहित्यमे आइओ वात्सल्य रसक परिपाक बहुत कम दृष्टिगोचर होइछ। मुदा मनबोध अपन उक्त काव्यक माध्यमे एहन-ने वात्सल्य रसक धार बहौलनि जे मैथिली साहित्य वात्सल्य रससँ परिपूर्ण बुझाए लागल। नेनाक लालन-पालन, ओकर चंचलताकेँ भोगब, ओहिसँ आनन्द उठाएब, ओकर बदमासीकेँ रोकबाक हेतु उपाय करब, उचित व्यवहारक शिक्षाक माध्यमे चरित्र-निर्माण करब आदि वात्सल्यताकेँ परिपुष्ट करैछ। एही सभ कारणेँ उक्त कृति बाल-मनोविज्ञानक सूक्ष्म-सँ-सूक्ष्म विन्दु धरि पहुँचि अपन महत्ता स्थापित करैछ।

अस्तु, आचार्य रमानाथ झाक उक्ति-

"विद्यापतिक रचना-शैलीकेँ छोड़ि एक गोट नवीन काव्य-रचनाक शैलीक प्रवर्त्तक होएबाक कारणेँ एहि कृष्णजन्मक मैथिली साहित्यमे बड़ विशिष्ट स्थान छैक ओ काव्यगुणहुमे ई ग्रन्थ तेहन मधुर, ललित, प्रसाद गुणसँ परिपूर्ण, सरल ओ रोचक भाषामे निर्मित भेल अछि जे उचिते एकर एतेक प्रचार ओ सम्मान होइत आएल अछि।"

तँ आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' लिखने छथि-

"कविक काव्य-प्रबन्ध पूर्व रंगक संगीतक इंगितपर नहि, छन्दबन्धक उन्मुक्त वातावरणमे विकसित लक्षित होइछ। एहि दृष्टिएँ आधुनिक मैथिलीपर जतेक प्रभाव ज्योतिरीश्वर-विद्यापतिक नहि, गोविन्ददास-रामदासक नहि, उमापति-नन्दीपतिक नहि, ततेक मनबोधक पड़ल अछि।"

एहि प्रकारेँ 'कृष्णजन्म' मैथिली काव्य सलिलाक ओहन स्वच्छ-निर्मल-पवित्र धार थिक, जकरा पाबि सम्पूर्ण मिथिला धन्य-धन्य भए उठल, प्रत्येक मैथिल आप्लावित भए उठलाह आ मैथिली चमत्कृत-अलंकृत भए उठलीह।

Scanned by TapScanner